59 P
934
Н

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1327
10/81

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 934

20/1
891.431
D491B

भन्डा फोड़

स्वामी देवानन्द जी निरपक्ष प्रचारक ने सन् १९३० ई० में
अपनी तुच्छ मति अनुसार तैयार की और सज्जनों
कवियों से अपील है कि कोई शब्द आपका
आया हो तो क्षमा हो।

प्रकाशक—

रघुबरदयाल शिवनरायन

बुकसेलर (एटा)

मुद्रक—

देवेन्द्र शर्मा, आदर्श प्रेस, आगरा।

बिना आज्ञा न छापें।

प्रथमवार ४०००] सन् १९३१ ई० [मूल्य)॥

पं० जवाहरलाल नेहरू

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 934
Date 27.12.71
GOVT. OF INDIA

॥ भन्डा फोड़ ॥

गज़ल ।

प्रभू प्रात फेरी में बिनती करूंगा ।
इसी देश पै मैं कटूंगा मरूंगा ॥
खिचे खाल चाहे भरे भुस उसी में ।
सुमिर गांधी को ना उफ़ में करूंगा ॥
चले तोप बन्दूक चाहे दुनाली ।
वहीं जाके पहिले ही सीना करूंगा ॥
चलो जेल भरदो मिटादो हुकूमत ।
सदा जाके दुनियां में सब से कहूँगा ॥
जवाहर को देके जगह जार्ज ही की ।
कहे स्वामी प्रण को मैं पूरा करूंगा ॥

भजन लहर शतक ।

हमारा सुधि लीजे अब करतार ।
विनय यही करता परमेश्वर करदो बेड़ा पार ॥
दमन चक्र भारत में भारी लखा नहीं अब जाता है ।
चौतरफा से गोली चलती देखत जी घबराता है ।
शान्ति नहीं करते अधिकारी शासन जोश कराता है ।

अगर सई कोई कहि डारै नहीं किसी को भाता है ॥
हा हा कार जगत में भारो जीने को धिक्कार ॥ हमारी ॥ १
मैं सोरों को ही रोता था जरोर में जो दमन जरा।
जत्रियां वाला गांव बनेगा गांव बड़ोदा जोश भरा ॥
बैन्ड बजाकर चढ़े वहां पर फूक माल का नाश कराय।
मारो घोड़ा तुम दौराओ रहे हिन्द सर सवज हरा ॥
विशियर काओं से पर बचना देदें यह फुसकार ॥ हमारी ॥ २
सन् ५७ तुमसोंई ने एक रोज बनवाय दिया।
इधर उधर की लिख २ झूठी यहां का नाश कराय दिया ॥
न्यायकारी के सर पर तुमने घड़ा पाप रखवाय दिया।
अमन सभा का नाम किया अरु दमन सभा बनवाइ दिया ॥
अजी दमन का ताऊ करिलेव जाओगे तुम हार। हमारी ॥ ३
अब स्वराज्य का शंक यहां पर बजा हमें दिखलाता है।
पर अन्धे के अन्ध भये यह देखत रहा न जाता है ॥
सत्य वृती नेता तप धारी बुरी गही कर वाता है।
स्वामी इसी दुःख में भाई मरीज तक बन जाता है ॥
रात दिना का यही सोच है मचि रही हा हा कार। हमारी ॥ ४

रसिया।

देश में हल्ला भारी है गान्धी बाबा को महाराज।
माल गुजारी पटन लगी यह भई तयारी है ॥
उधर बृटिश ने सुलह करी यह बात विचारी है। गान्धी ॥१॥
बाल वृध अरु नवयुवकों ने हृदय बिचारी है।
मरे देश पर आज राम ने विपता डारी है ॥ गान्धी ॥२॥
इत किसान रोवे घर बिक गयो लोटा थाली है।

जमीदार बैठो द्वारे पर दैरहो गारी है ॥ गान्धी ॥३॥
स्वामी देवानन्द यही सब काज बिसारी है।
देव सहारा हमें शरण हम लई तुम्मारी है ॥ गान्धी ॥४॥

धन्य है वो भूमी अरु धन्य हैं वाके भाग।
जहां पर भारत प्यारे जन्मे जो हैं पूरन त्याग ॥
बारे गान्धी बाबा तेने भारत को जगाइ दियो।
मंत्र ये अहिन्सा तेने सब को ही सिखाइ दियो।
घोर था ये कलयुग करिके सतयुग दिखाइ दियो।
रंग ये तिरंगा झंडा घर २ फैराइ दियो ॥
धनि हैं गांधी बाबा तुम को बधिं गई जग में धाग ॥ धन्य ॥१॥
पेटकिढा तेने अपने जाइमें उठाइ दिये।
हिन्द वासी सहज ही में गोरों से जुटाइ दिये।
रोकी है शराब पेड़ ताड़ी के कटाइ दिये ॥
जालिम जुल्म जोर तेने सारे ही घटाइ दिये।
रंग निराला किया दयानिधि गा चरखे का राग ॥ धन्य ॥२॥
संग में सिपाही तेरे तनुखाऊ को त्याग करें।
चाहे तेसो संकट होय तोऊ तेरी हूक भरें।
बहुत सिपाही गोली डंडो से ही जाइ मरें।
चेतत नाहीं अभी आँधरे फूटें जिनके भाग ॥ धन्य ॥३॥
स्वामी देवानन्द आजु माखनपुर भी छोड़ दियो।
साही पोल खोल वाने भन्डा हू तो फोड़ दियो।
गांधी नेताओं से जाके नातो अपनो जोड़ दिये।
करते हैं कुकर्म उनसे मतलब सारा छोड़ दिये ॥
अब ना काम कछू दुनियाँ में सोवत से गयो जाग ॥ धन्य ॥४॥

रसिया ।

जोहर करिदेगी—भावा तेरी आतम कारो ॥
कायर क्रूर दोगले चुगिला—उनको कचिलेगी ।
शासन करने वालों का ये नाश करा देगी ॥ १ ॥
कारे कारे नाग पहुनियां इन्हैं जगा देगी ।
जालिम जुलम करन वालों को जल्द भगा देगी ॥ २ ॥
पड़ो गुली तोंक तोड़ कर बुरी सज़ा देगी ।
सुतंत्रता की वेलि सकल भारत में बढ़ा देगी ॥ ३ ॥
तुम कायरपन तजा तुम्हें आजाद बना देगी ।
अभी समैया आयगयो सुराज दिला देगी ॥ ४ ॥

दौड़ ।

प्रभू जी तुम्हें यहां आना पड़ेगा ।
ये झन्डा तिरंगा उठाना पड़ेगा ॥
ये ऐसे पड़े घोर निन्द्रा में हिन्दू ।
सो देकर झलक अब जगाना पड़ेगा ॥
उठी भाई भाई के दिल में बुराई ।
अब तो प्रेम सिखलाना पड़ेगा ॥
पड़े जेल खाने में नेता हमारे ।
कृपा करके जल्दी छुड़ाना पड़ेगा ॥
हा लाखों की तादाद कटे हैं पशू जो ।
अहिंसा से तुमको रखाना पड़ेगा ॥
महाराज आकर लगादो सहारा ।
सदा सत्य हम पर बुलाना पड़ेगा ॥

ज्यौनार चर्खा ।

सासु मेरी गांधी को चरखा चलि रहो ।
जि तो बैठो चलावै कारागार ॥ सा० ॥
सासु मेरी कलयुग के संग्राम मैं-इत गांधी उत सरकार ॥सा०॥१
शाही मशीन गनें चलें-होय गोली की ब्यौछार ॥ सा० ॥ २ ॥
सत्याग्रही डटि रहे-ना बांधे हाथ हथियार ॥ सा० ॥ ३ ॥
चर्खा चकी देरहो-घूं घूं करे भरे हुक्कार ॥ सा० ॥ ४ ॥
तकुआ तीर चढ़ाइ लिये-जाकी पैनी करिलई धार ॥ सा० ॥ ५ ॥
माल मेल की तान रही-तकि मारो सागर पार ॥ सा० ॥ ६ ॥
लंदन में हलचल मची-जाकी ऐसी बैठो मार ॥ सा० ॥ ७ ॥
असहयोग की जीत हो-जे कायर भजे पिछार ॥ सा० ॥ ८ ॥
निर्भय बंदर बांदड़ी-जे जायंगी झगुलिया झार ॥ सा० ॥ ९ ॥

भजन ।

गांधी अवतार आये आये आये ।
सतयुग के प्राण पियारे-जो भारत के उजियारे ।
महिमा अपरम्पार ॥ आये ॥ १
त्रेता में रावण दल मारो-ले वानर दल अति भारो ।
लंका करिदई छार ॥ आये ॥ २
द्वापुर दुर्योधन भारी-द्रोपति की करी ख्वारी ।
बढ़ाइदियौ चीर अपार॥आये॥ ३
लखि कलयुग की कठिनाई-बनि साधू बैठे आई ।
लखो सोभा नरनार ॥ आये ॥ ४

इन असहयोग को भाई–दिया मूलमंत्र सिखलाई।
सुनी है दीन पुकार॥ आये॥ ५
इन चर्खा चक्र चलायो–अरु यूरुप भो दहलाया।
कि आयो काल हमार॥ आये॥ ६
कवि रज्जु तुम्हें सुनावे–जो नित इनके गुण गावे।
होय भवसागर पार आये आये आये॥

पता० स्वामी देवानन्द जी
मारफ़त—खन्ना जो बुकसेलर
जिला ऐटा